आज का पुरुषार्थ 8 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" स्वयं को पहचान कर ड्रामा के राज़ को जानते हुए बाबा की मदद से अपनी स्थिति को अचल अडोल बनाने का पुरुषार्थ "*

हम सभी को एक बहुत सुन्दर **लक्ष्य** है अपनी **स्थिति को अचल अडोल बनाना।** विभिन्न परिस्थितियाँ सामने आती है, भिन्न-भिन्न comments लोगों के द्वारा सुनने भी पड़ते है, अपने भी पराये जैसा व्यवहार करने लगते है कुछ ग़लतफहमियों से भी इधर-उधर की बातें होने लगती है।

लेकिन हमें अपनी **स्थिति** तो अचल अडोल बनाना ही है। उसके लिए **आत्मा** की स्मृति, **बाबा** की स्मृति और इस **विश्व ड्रामा** की स्मृति हमें बहुत मदद करती है।

आत्मिक स्मृति से हमें स्वयं में **विश्वास** बढ़ता है। हम कौन है, क्या है, हमारी शक्तियाँ क्या है, हमें अपनी सत्यता की शक्ति में सम्पूर्ण विश्वास रहता है।

और तब यदि हमें कोई कुछ बोले भी तो हम **सत्यता की शक्ति** के कारण अचल अडोल रहते है।

बाबा की स्मृति, जब कोई चिन्ता वाली बात, जब कोई बहुत भयानक परिणाम देने वाली बात सामने आ जाती है तो बाबा की स्मृति हमें अचल अडोल बनाने में बहुत सहायक होती है। केवल बाबा को याद करने की बात नहीं !

" भगवान मेरा है ! वह मेरे साथ है ! उसके साथ होने के बाद प्रकृति भी मुझे सम्मान देंगी ! तो मनुष्य की बात ही क्या ! परिस्थितियाँ आपेही हट जायेगी ! "

तो बाबा की शक्तियाँ हमारे साथ काम करती है। हम अपनी चिन्ता और समस्याओं को उनपर समर्पित करके अचल अडोल स्थिति को बना पाते है।

और तीसरी बात है हमें **ड्रामा का सम्पूर्ण ज्ञान और उसकी स्मृति।** उसमें भी विशेष रूप से ... जो कुछ हो रहा है वही हो रहा है जो कल्प पहले भी हुआ था, नाथिंग न्यूं।

ज़रा बाबा की ओर देखें, बाबा जब इस संसार के हर सीन को देखता है तो उसे नैचुरल याद रहता है यह वही हो रहा है जो पिछले कल्प में भी हुआ था, जो बारम्बार हुआ है। यह वही हो रहा है, जो होना है, नाथिंग न्यूं।

इसलिए उनके अंदर साक्षीभाव रहता है। हम भी ड्रामा के इस ज्ञान की स्मृति के द्वारा अपनी स्थिति को अचल अडोल बनायेंगे। और यदि किसी माया के प्रभाव से स्थिति डोलायमान होती है, किसी वासनाओं के कारण संकल्प बहुत ज्यादा चलते है, तो भी हम याद रखेंगे ...

" **मैं आत्मा परम पवित्र हूँ** ".. बाबा ने मुझे माया को जीतने के लिए सारी शक्तियाँ दी है .. और इस ड्रामा में मेरी विजय निश्चित है

यह तीनों बातें **याद** रखने से माया के किसी भी प्रभाव को हम सहज ही समाप्त कर पायेंगे। तो **ड्रामा** की कुछ point अपने पास निकालकर रख लिया करे। जिनकी स्मृति हमें **अचल अडोल** बनाती है।

सबकुछ समाप्त होना है। **प्रकृति** प्रकोप करके इस **धरती को स्वच्छ करने वाली है**। तो हम पहले से ही ड्रामा की स्मृतियों के द्वारा अपने में साक्षीभाव ले आये।

तो आज हम इस सारे खेल को साक्षी होकर देखेंगे और अभ्यास करते रहेंगे

" बाबा हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है "

और ऊपर से देखेंगे ...

" बाबा की शक्तियों की किरणें मुझ पर पड़ रही है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org